हिंदी की महिला लेखिकाओं के कथा साहित्य में चित्रित नारी स्वतंत्रता

प्रा. लक्ष्मण किसनराव पेटकुले
(हिंदी विभागाध्यक्ष)
एस. एन. मोर महाविद्यालय,
तुमसर, जि. भंडारा
मो. नं. ९९२१४१४२९८
ई–मेल : lkpetkule1980@gmail.com

सारांश : *मनु की नौकरी पेशा नारियाँ तो आत्मनिर्भर होने के बल पर रूढ़ियों को नकारती है, अपनी अस्मिता की तलाश में सदैव प्रयत्नशील रहती है। पुरुषों को भंग करने का साहस रखती है। वह चिंतनशील हैं, जागरूक है, आधुनिक विचारों से संपन्न है। मैत्रेय पुष्पा की कहानी साहित्य में नारी स्वतंत्र विचारों वाली है। वह गाँव में रहकर भेड़ बकरीयाँ ही नहीं चराना चाहती, चार दिवारो के अंदर घर गृहस्थि को ही नहीं देखना चाहती बल्कि गाँव की मुखिया बनकर वह गाँव की राजनीति के माध्यम से लोगों की समस्याओं को समझकर उन्हें दूर करने का प्रयास भी करती है। उषा प्रियंवदा की कहानियाँ भी स्त्री को स्वतंत्र विचारों में रखने की हिमायती है। अपने पर हुए शोषण के खिलाफ आवाज उठाती नजर आती है। 'एक कोई दूसरा' इस कहानी में रानी एक मुस्कुराती, खिलखिलाती लड़की है और वह अपनी भौजई की द्वारा शादीशुदा जिंदगी अपनाने की बात आते ही रानी ने भौजई की इन विचारों को ठुकरा देती है और स्वयं स्वतंत्र विचारों वाली होने का परिचय यहाँ पर देती है। इस लेख में नारी स्वतंत्रता को उजागर करने का प्रयास रहा है। अगर स्त्रीया ठान ले तो वह अपने स्वतंत्र विचारों पर भी कायम रह सकती है। बस उसे आसमान में उड़ने की चाह कायम रखे।*

बीज शब्द : *नारी, स्वतंत्रता, स्वावलंबी, सशक्तिकरण*

प्रस्तावना :

सशक्तिकरण की प्रक्रिया में समाज को पारंपरिक पितृसत्ताक दृष्टिकोण के प्रति जागरूक किया जाता है, जिसने महिलाओं की स्थिति को सदैव कमतर माना है। वैश्विक स्तर पर नारीवादी आंदोलनों, महिला सशक्तिकरण भौतिक या आध्यात्मिक, शारीरिक या मानसिक सभी स्तर पर महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है।

महिला सशक्तिकरण को बहुत ही आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाएँ शक्तिशाली बनती है। जिससे वह अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती है। समाज में उसके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है। इसमें ऐसी ताकत है कि वह समाज और देश में बहुत कुछ बदल सके। वह समाज में किसी समस्या को पुरुषों से बेहतर ढंग से निपट सकती है। विकास की मुख्यधारा में आ सकती है। समय के साथ महिलाओं ने अपने महत्व को जगजाहीर भी किया है। उसने

दुनिया को बताया की वह सिर्फ संतोत्पत्ति के लिए नहीं है। वह कवि, लेखक, योद्धा, खिलाड़ी, राजनेता और अंतरिक्ष यात्री भी बन सकती है। उसने अपनी भूमिका को हर बार स्पष्ट और सिद्ध किया है। लेकिन क्या हम महिलाओं को पूर्ण शिक्षा देते हैं? क्या हम महिलाओं को अपनी पसंदीदा जोड़ीदार चुनने का अधिकार देते है? क्या हम उसे नौकरी, उद्योग या फिर राजनीति में जाने का अधिकार देते हैं? क्या समान होने का सम्मान हम उसे देते हैं? ऐसे कई तमाम प्रश्न उपस्थित होते हैं जो मन को इस आधुनिक युग में भी व्यथित करते हैं यह सही है कि, पिछले सत्तर सालों की अगर तुलना की जाए तो स्त्रियों की स्थिति निश्चित रूप से पहले की तुलना में अच्छि नजर आएगी। लेकिन यह सच भी हम ठुकरा नहीं सकते कि महाराष्ट्र की पायल तड़वी हो, यदि शीतल आमटे हो या फिर गुजरात की आयशा की आत्महत्या हो इन महिलाओं को क्यों अपने प्राणों को त्यागना पड़ा। इस का उत्तर खोजने की कोशिश की जाय तो यह समझ में आता है कि इसके पीछे कई–न–कई पुरुषी मानसिकता और उसकी बरबरता नजर आयेगी। आज भी अपने आप को सभ्य और सुशिक्षित समझने वाला समाज स्त्रियों के बारे में सत्तर साल पुरानी मानसिकता का परिचय देते नजर आता है। जो समाज के लिए अत्यंत घृणा की बात है।

नारी वास्तव में वह अपने–आप में वह शक्ति है। यदि वह ठान ले तो उसके लिए कोई बात बड़ी नहीं है। उसने प्राचीन काल से लेकर आज आधुनिक युग में अपने आप को सिद्ध करती आई है। चाहे किसी भी क्षेत्र में हो अपना परचम वह लहराती नजर आती है। सामाजिक, राजनीति, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक इत्यादि क्षेत्रों में वह अग्रसर रही है। सामाजिक क्षेत्र में मदर तेरेसा, सिंधुताई सपकाल, राजनीति में इंदिरा गांधी, प्रतिभाताई पाटील, सुषमा स्वराज, मायावती, वसुंधरा राजे, ममता बॅनर्जी, स्मृति ईरानी, आर्थिक क्षेत्रों में गीता गोपीनाथ, इंद्रा नूवी, अल्का बॅनर्जी, रश्मि सिन्हा, गार्गी घोष, रणजी नागस्वामी, मोरा नायर आदि। साहित्यिक क्षेत्र में महादेवी वर्मा, महाश्वेता देवी, मन्नू भंडारी, खेल क्षेत्र में पीटी उषा, सायना नेहवाल, सानिया मिर्झा, मेरी कोम आदि।

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में महिला लेखिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। समय–समय पर महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, कृष्णा सोबती अलका सरावगी, चित्रा मुद्गल, गीतांजली श्री आदि लेखिकाओं की रचनाओं में महिलाओं पर हुए अत्याचारों के प्रति या महिलाओं के अधिकारों को लेकर इन रचनाकारों की रचनाएँ भरी पड़ी है। यह लेखिकाएँ अपने अधिकारों के प्रति सचेत होकर भारतीय महिलाओं को सशक्त करने का माध्यम इन्होंने साहित्य को चुना है। और अपनी साहित्यिक हुंकार से महिलाओं पर होने वाली हिंसा, अशिक्षा, कई पुरानी सड़ी गली परंपराओं का विरोध किया है। तभी तो साहित्य समाज का मार्गदर्शन होता है।

मन्नू भंडारी ने अपने कई कहानियों में महिलाओं की आवाज बुलंद की है। इनके साहित्य में महिलाओं का विद्रोह का स्वर मुखर हुआ है। वह अपनी 'इसा के घर ईन्सान' इस कहानी में नन् एंजिला फादर के ढोंग का पर्दाफाश करती है फादर एक महिला मिशनरी कॉलेज में कॉलेज महिला स्टाफ का शोषण करता है। परंतु एंजिला एक स्वतंत्र और सुलझे हुए विचारों की महिला है वह रत्ना के पूछने पर एंजिला जवाब देती है ..... ''मुझे कोई नहीं रोक सकता मैंने तुम्हारे फादर..... अब वे कभी ऐसी फालतू की बातें नहीं करेंगे।'' एंजिला मुलायम और नीली आँखों वाली सुंदर नारी है किंतू उसका हृदय स्वस्थ और मनोबल प्रबल है।

मन्नू भंडारी की दूसरी कहानी 'जीती बाजी की हार' इस कहानी में मुरला अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। तभी वह अपनी बाकी की सहेलियों की तरह कॉलेज छूटने के बाद शादी नहीं करती। इसका मतलब यह नहीं है कि उसे रिश्ते नहीं आये? मुरला को रिश्ते बहुत आये लेकिन उसने वह रिश्ते ठुकरा दिए मुरला को ऐसी लड़कियों पर तरस आता था जो हर समय पति और परिवार की ही बातें करती रहती है। उसे प्रश्न पड़ता है कि 'एक पढ़ी–लिखी लड़की किस प्रकार अपने विचारों और व्यक्तित्व का खून करके पति के रंग में रंग सकती है।' मुरला के साथ की सहेलियों का विवाह हो जाता है लेकिन मुरला अपना पूरा ध्यान संशोधन कार्य में लगाकर अपनी स्वतंत्रता का परिचय देती है। तो वही 'हार' कहानी कि दीपा एक राजनीतिक परिवार से थी। उसके घर हर रोज कई राजनीतिक दलों के लोग आते थे जिसके कारण राजनीतिक वातावरण का उस पर अच्छा खासा प्रभाव पड़ा था। एक राजनीतिक सभा में दीपा ने एक नेता का विरोध किया था। तभी वह नेता कह गया कि 'अब लड़कियों के सामने राजनीति में बहस कौन करें।' तभी यह ताना सुनकर दीपा को अपनी स्वावलंबन का अहसास हुआ और वह सक्रिय राजनीति को ही अपना जीवन बना लिया।

उषा प्रियंवदा की प्रसिद्ध कहानी का 'एक कोई दूसरा' में रानी नामक लड़की एक स्वतंत्र विचारों वाली है। स्वयं पर दूसरों के विचारों को वह थोपने नहीं देती। उसके मन में जो आता है वही वह करती है। अपनी स्वतंत्र विचारों का परिचय देती हुई रानी कहती है कि..... ''पतझड़ कहाँ? मेरे ऊपर तो चीर वसंत है। मैं मुस्कुराती हूँ, मैं सच ही वासंती बयार हूँ। जहाँ जाती हूँ, घर प्रांगण सुगंधित कर देती हूँ।'' मैत्रम पुष्पा की 'फैसला' इस कहानी में नारी सशक्तिकरण की बात करती है। इस कहानी में बसुमती जो एक भेड़ बकरियाँ, तथा घर का कामकाज करने वाली महिला है। वह गाँव के लिए कुछ करने की चाह रखती है इसलिए गाँव के प्रधान का चुनाव लड़ती है। इस चुनाव में वह भारी मतों से जीत जाती है। बसुमति स्वयं कहती है कि मैं गाँव की प्रधान बन गई हूँ तो उनकी (पति) प्रतिष्ठा कई गुना उँचे चढ़ गई है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि स्त्री शिक्षण यह वह माध्यम है जो स्त्री को सफल होने का अहसास दिलाता है। हिंदी साहित्य में मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, मैत्रेय पुष्पा आदि लेखिकाओं की कथा साहित्य में नारी सशक्तिकरण और उसकी स्वतंत्रता पर प्रकाश डाला गया है। मन्नू भंडारी की कहानियों में महिला पुरुषों के प्रति वह विद्रोह करती नजर आती है, तो कहीं राजनीति में उतरती है। वहीं उषा प्रियंवदा की नारी भी अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहकर स्वतंत्र जीवन जीने की चाह रखती है। तो मैत्रेय पुष्पा की महिला घर गृहस्ती से परे वह निर्णय प्रक्रिया में शामिल होने के लिए गाँव के प्रधान का चुनाव लड़ कर वह प्रधान बन जाती है। और गाँव की सेवा करती है।

स्त्री कभी भी वह लाचार और मजबूर नहीं है अगर किसी ने उसे मजबूर करने का प्रयास किया है, तो वह है पुरुष और उसकी पुरू ाी मानसिकता। हर युग में स्त्री अपने आपको साबित करती आई है। की वह पुरुष की तुलना में किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। इस वास्तविकता को हम नकार नहीं सकते।

संदर्भ :

- कथाकार मन्नू भंडारी, अनिता राजुरकर, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
- कथा लेखिका मन्नू भंडारी, डॉ. ब्रज मोहन ार्मा, कादंबरी प्रकाशन, दिल्ली
- मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य, श्रीमती नंदीनी मिश्र हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ
- 'फैसला' कहानी संग्रह, मैत्रेय पु पा
- 'मेरी कहानियाँ', मैत्रेय पु पा
- 'जिंदगी और गुलाब के फूल', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक, २००४